onlineBU.com

NS – 084

III Semester B.A. Examination, Nov./Dec. 2016
(C.B.C.S.) (Repeaters) (2015-16 Only)
LANGUAGE HINDI – III
Natak, Sankshipthikaran and Anuvad

Time : 3 Hours Max. Marks : 70

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर **एक** शब्द या **वाक्य** में लिखिए : **(1×10=10)**

1) सोमदत्त के पिता का नाम क्या है ?
2) बन्सतसेन किसके गुप्तचर थे ?
3) रविसेन किससे प्रेम करता था ?
4) 'अग्निशिखा' – नाटक के रचनाकार कौन हैं ?
5) राक्षस, किसे 'कुसुमपुर की लक्ष्मी' कहता है ?
6) कुमार मलयकेतु के पिता का नाम क्या है ?
7) चाणक्य और चन्द्रगुप्त से कौन प्रतिशोध लेने के लिए कटिबद्ध था ?
8) सुवासिनी पहले किस रंगशाला की नर्तकी थी ?
9) तक्षशिला में कितने विषयों की शिक्षा दी जाती थी ?
10) चन्द्रगुप्त के अनुसार कौन हृदय का व्यापार करते थे ?

II. किन्हीं **दो** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **(7×2=14)**

1) नारी की करुणा से राज्य संचालित नहीं होते महाभागे। राज्य चोर को क्षमा नहीं कर सकता ।
2) राज्य स्थिर रहते हैं राजनीती से कूटनीति से नहीं । कूटनीति से तो षड्यंत्र चलते हैं ।
3) पर महाराज नंद तो हृदय का व्यापार करते थे और उस व्यापार में वे अपना सारा साम्राज्य हार गए ।

III. 'अग्निशिखा' – नाटक का सारांश लिखकर शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए। **(16×1=16)**

अथवा

'सोमदत्त' और 'शिखरसेन' का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

IV. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : **(5×2=10)**

1) रविसेन । 2) रोहिणी और चाणक्य का संवाद । 3) सुवासिनी ।

P.T.O.

onlineBU.com

V. निम्नलिखित गद्यांश का उचित शीर्षक देते हुए **एक तिहाई** शब्दों में संक्षेपण कीजिए : 10

यदि परीक्षा न हो, तो फिर प्रतियोगिता की भावना का विकास ही न हो । मानवमात्र के विकास से ही समाज, राष्ट्र और विश्व का विकास होता है। अत: यदि परीक्षाएँ न हों, तो प्रतियोगितामात्र का ही विकास न हो और इससे न तो मनुष्य की बुद्धि को चुनौती मिलेगी, न इसके लिए वह चेष्टा करेगा, न परिश्रम करेगा, न अध्ययन करेगा और इसका परिणाम होगा कि मानव-समाज के विकास के सारे द्वार अवरुद्ध हो जाएँगें। परीक्षा से उपस्थित या नियत समय में अपने अध्ययन के सार को सफाई से व्यक्त करने की आदत बनती है। आवश्यक और अनावश्यक के अंतर को भी परीक्षा के द्वारा ही समझने का अवसर मिलता है। किसी विषय पर वस्तुनिष्ठ दृष्टि से विचार करने का कौशल भी हम परीक्षा के द्वारा ही सीखते हैं। अत: परीक्षा कोई भयोत्पादिनी दानवी नहीं, जो हमारे सारे सुखों को लील जाने के लिए अपना विकराल मुँह फैलाती हो, वरन् यह वह देवी है जो हमें उन्नती के स्वर्णिम शिखर पर ले जाने के लिए द्वार खोलती है। परीक्षा ऐसी किरणमाला है, जो हमारी संभावनाओं के शतदल को प्रस्फुटित करती है।

VI. हिन्दी में अनुवाद कीजिए : 10

ಮಹಾತ್ಮಾ ಗಾಂಧೀಜಿಯವರು ತೀರಿಕೊಳ್ಳುವ ಮೊದಲೇ ಭಾರತ ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯವನ್ನು ಗಳಿಸಿತ್ತು. ಆದರೆ ಬಡತನ ಮುಂಚಿನಂತೆಯೇ ಇತ್ತು. ಆದುದರಿಂದ ವಿನೋಬಾಭಾವೆಯವರು ತನ್ನ ಮುಂದಿನ ಜೀವನವನ್ನು ದೇಶದ ಬಡತನ ನಿರ್ಮೂಲನ ಮಾಡುವ ಕಾರ್ಯದಲ್ಲಿ ಕಳೆಯಬೇಕೆಂದು ನಿಶ್ಚಯಿಸಿದರು. ಆದರೆ ಹಸಿವು-ಬಡತನಗಳ ಭಯಂಕರ ಶಾಪದಿಂದ ಹೇಗೆ ಮುಕ್ತಿಪಡೆಯಲಿ ? ಹೈದರಾಬಾದಿನ ಒಂದು ಹಳ್ಳಿ ಅವರ ಈ ಪ್ರಶ್ನೆಗೆ ಉತ್ತರ ಕೊಟ್ಟಿತು. ಆ ಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿ ವಾಸಿಸುತ್ತಿದ್ದ ಹರಿಜನರು ತಮ್ಮ ಶೋಚನೀಯ ಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ಅವರಲ್ಲಿ ಹೇಳಿಕೊಂಡರು. ಆ ಹಳ್ಳಿಯ ಜನರು ನೆರೆದಿದ್ದ ಒಂದು ಸಭೆಯಲ್ಲಿ ಭಾಷಣ ಮಾಡುತ್ತಾ ವಿನೋಬಾಜೀಯವರು, ಕೆಲವು ಭೂ ಮಾಲೀಕರನ್ನು ನೀವು ನಿಮ್ಮ ಭೂಮಿಯ ಕೆಲವಂಶ ಬೇಸಾಯಗಾರರಿಗೆ ಹಂಚಿಕೊಡಲಿಕ್ಕೆ ದಾನಮಾಡಬೇಕೆಂದು ಕೇಳಿಕೊಂಡರು. ಕೂಡಲೇ ಒಬ್ಬ ಭೂಮಾಲೀಕನು ನೂರು ಎಕರೆ ಭೂಮಿಯನ್ನು ದಾನ ಮಾಡಿದನು. ಹೀಗೆ ಭೂದಾನ ಯಜ್ಞ ಆರಂಭವಾಯಿತು. 1951ನೇ ಇಸವಿಯ ಆ ದಿನದಿಂದ ವಿನೋಬಾಜೀಯವರು ಬಡವರಿಗಾಗಿ ಭೂ ಮಾಲೀಕರಲ್ಲಿ ಭೂಮಿದಾನ ಕೇಳುತ್ತಾ ದೇಶದ ಎಲ್ಲೆಡೆ ಸಂಚಾರ ಮಾಡಿಕೊಂಡಿದ್ದಾರೆ.

When Mahatma Gandhi died, India's Independence had already been won. But poverty remained and Vinoba Bhave soon decided that the rest of his life had to be spent in the abolition of poverty. How could the terrible curse of poverty and hunger be overcome ? The answer to this question was given to him in a village in Hyderabad. The Harijans there told him of their miserable condition. At a gathering of the village people, Vinoba suggested that some land-owners might offer some of their lands to be distributed among the peasants. At once a certain land owner offered his hundred acres of land to Vinobaji. This was the beginning of the Bhoodan movement. From that day in 1951, Vinoba Bhave has been touring the country, asking the land owners to donate land for the poor.